चार जिनस्तुतिओ

सं. मुनि धुरन्धरविजय

अत्रे चार जिन-स्तोत्र आपवामां आवे छे. आमां बे स्तोत्र सम्बन्धी (कुटुम्ब) नामगर्भ स्तोत्रो छे, अने बे स्तोत्रो खाद्यपदार्थनामगर्भ स्तोत्र छे.

प्रथम आदिनाथस्तुति वा. लब्धिसागरना शिष्य पं. भक्तिसागर गणीकृत छे, ते शिवपुरी (म.प्र.) संघना श्रेयार्थे रचेलुं छे. बीजुं मगसी पुर(मक्षीजी) मण्डन पार्श्वनाथनुं स्तवन पं. राजसागरशिष्य रविसागरकृत छे. बन्ने स्तोत्रोमां आवतां सम्बन्धीनामो जेवा शब्दोने Black टाईपथी आप्या छे, जेथी पाठकने तरत खबर पडी जशे.

त्रीजुं स्तोत्र युगादिनाथविज्ञप्तिनुं सुखभक्षिका (खाद्य पदार्थ) गर्भित स्तोत्र ते पण पं. रविसागरकृत छे. आ रविसागरजी तपगच्छे हीरविजयसूरि परिवारे पं. राजसागरना शिष्य छे. बीजुं तथा त्रीजु ए बन्ने स्तोत्र तेमनी ज रचना छे.

चोथुं वीरजिनस्तोत्र पण सुखासिकागर्भित-खाद्यनामगर्भित छे. तेनी रचना वा. धर्मसागरगणिशिष्य वा. लब्धिसागरजी शिष्य उपाध्याय नेमिसागरनी छे.

आपणी रोजिंदी लोकबोलीना प्रयोगना शब्दोने आ रीते गोठवीने अने गुंथीने विद्वान कविओए संस्कृत भाषा पासे जे काम लीधुं छे ते अजबगजबनुं छे.

आमां प्रथम स्तोत्र धरावतुं पानुं उज्जैनना भंडारनुं छे, अने अन्य ३ स्तोत्रो धरावतुं पानुं वडोदरानी युनिवर्सिटीना संग्रहनुं छे.

★★★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चार जिनस्तुतिओ

(१) श्रीआदिनाथस्तुति - कुटुम्बनामगर्भिता

॥ श्रीगुरुभ्यो नमो नमः ॥

जयकर जन्तुकृपालय ! पालय नतमुनिचन्द्र ।
ऋषभजिनार्कसनाभि-र्नाभिकुलाम्बरतन्द्र(चन्द्र) ॥१॥

काका-काकीर्णोद्धर **मामामामि**लितः ।
सासूनृतमरूपम ! **ससुरो**मामिलितः ॥२॥

जयजयरवन**न्दीकरो दिक्क**रिविमलयशः ।
भाभो-भाभी रतिकर ! **दादो-दा**दिविशम् ॥३॥

देवर-दावलि दीधिति-निर्जितदाडिमबीज ! ।
भाइनवाणी वितरतु रोगाद्यशु**भत्रीज** ॥४॥

भतरीजीवसुखावह ! **भाणेजी**वनदः ।
रक्ष शु**भाणेजो** जय कारकजीवनदः ॥५॥

शालीकृतशिव ! **शालो-देरानी**तिकरः ।
ज्येष्ठभवोदधितारक ! **जेठानी**तिहरः ॥६॥

मासुखमाशीर्वादो बहुशिवसुख**भरतार** ।
सुकृतलतापल्लवना **बहनी**रदवरतार ॥७॥ (त्रिभिर्विशेषकम्)

भोजाईतिप्रशामक ! रे**फई**तार्त्तिविलाप ! ।
ज्ञान**जमाइ**भगतिधर देहि सुकृत**माबाप** ॥८॥

सुजना**नन्दरजो**ज्झित ! **नान**न्दरिपुकन्द ! ।
दर्शतस्तव जिनवर ! मादृश एष ननन्द ॥९॥

श्रीमद्वाचकलब्धिसागरगुरोः शिष्याणुना **भक्तिना**
नीतः संस्तुतिगोचरं जिनपतिः श्रीमत्कुटुम्बाह्वया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेयःश्रेष्ठकुटुम्बवृद्धिमतुलां कुर्याद् युगादिप्रभुः
श्रेयःसन्ततिकारकः **शिवपुरीसङ्घस्य** कल्याणकृत् ॥१०॥

॥ इति श्री ६ आदिनाथस्तुतिः सम्पूर्णा ॥ कृता पं. भक्तिसागरगणिना ॥

★★★

(२) श्रीमगसीपुर-पार्श्वनाथस्तवनं कुटुम्बनामगर्भितम्

(राग - केदारगुडी तथा आसाउरी)

श्रीमगसीपुरमण्डन ! शम्भो-दय जयदायक ! नायक ! शम्भो ! ।
श्रीपार्श्वामयसञ्चयदम्भो, गममपनय मदनाघमदम्भो ॥१॥

माताराभवतो भुवि कस्यां, **बाबा**रानुकृतिर्नहि कस्याम् ? ।
काकाराद्भुतभूघनकान्ता, **काकी**र्णाननुमतिते कान्ता ॥२॥

मामारः परिभवतु नितान्तं, **मामी**सुरभवतागमतान्तम् ।
मासुख-शितिदशमीभव पोषे, **मासी**हितकारक ! [गतदोषे]॥३॥

भाईभासुरभूघनकान्ते ! **बह निघ**नीव्रजततमकान्ते ! ।
ससरोदयधारकहरिनूता **सासू**नृततनुभा भुवि नूता ॥४॥

भा भुजयामलमञ्जुलकाया **भाभी** रुचिर वितरतु काया ।
देवरणोज्झितसुखकरवाणी **देवराणी** अयि तरतनुबाणी ॥५॥

दिकरो निखिलकलागुणदाना **दिकरी**तिः परकुशलनिदाना ।
भाणे जय कारणजितभाना **भतरीज्ये**ष्ठरुचे हसमाना ॥६॥

कलशः

स्तोत्रेऽत्राऽस्ति कुटुम्बशब्दमिलनं दृग्दष्टमात्रं यथा
विज्ञायाऽसफलं भवेऽपि निखिलं कौटुम्बिकं तत् तथा ।
श्रीमत्**पण्डितराजसागर**सुधीः शिष्यो (सुधीशिष्यो) महानन्दनं
श्रीपार्श्वं रविसागरस्त्व(स्तु) **मगसी**चूडामणी(णीं) नौत्यलम् ॥७॥

॥ इति मगसीपार्श्वदेवस्तोत्रं कुटुम्बगर्भितम् ॥

★★★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) श्रीयुगादिदेवविज्ञप्तिकारूप-सुखभक्षिकागर्भितस्तोत्र

(राग - केदारु फाग)

श्रीसंघे वर साकर जय नृपमोदक सेव !
विमलजले बीजे सदमरकीर्तितजिनदेव ! ॥
हिङ्गुलखण्डविभारुण ! ममलाप सीमदान,
भविकं सार चकारतयिन पदकमलममान ॥१॥

वरसोलाघबदामय चारो लीनिमजाभ,
[जन]पस्तांतिम खारिक भीत इमावसुलाभ ॥
सुदमी दुष्कनिशाकर कोहलापाकर पाहि,
वि(जि?)तशोकाकबली वृषखण्डर परमयशाहि ॥२॥

अखलहलांककक्कूलिर खरमांगतिनिद्राख,
आटोपरां सदा फल करणी पयडा शाख ।
सार विचार विदाडिम रतबत नालीकेर,
अकरमदां बकपूरक महसां तनु असु बेर ॥३॥

केलांगुलि नारिंगक जम्बीरांचिततान,
मति रां जाय फला लिंब कमरख नेमूस्त्वान ॥
अकलिं बुधनर जां बुधिजरगोजांकिर बोर,
कयरीतिकृतपरायण पीलुगतेरकठोर ॥४॥

वालुरणी नविडांगर डोडाध्यान लविंग,
कर्मक्षपणे गांतवनाददवत्तरसंग ॥
वीतजराबमरी तेल भाजी कलमधमाल,
क्षीरदहीरनृपानत सोपारीरससार ॥५॥

कलश

श्रीतपगणाधिपहीरविजयगुरुगच्छभूषितबुधवर-
श्रीराजसागरशिष्यपण्डितसुरविसागरनामतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीनाभिभूपतिवंशदिनपतिवृषभजिनपतिपी(री)हितं
कुरुतान्मतो **जिनसागरस्य** च नाकिनायकसन्मतः ॥६॥

॥ इति श्री युगादिदेवविज्ञप्तिकारूप-सुखभक्षिकागर्भितं स्तोत्रं सम्पूर्ण ॥छ॥

★★★

(४) श्रीवीरजिनस्तोत्रं सुखासिकागर्भितम्

जयसि **साकर मोदक** हे शमी, सुकृतवृक्ष**जले बि**भयक्षयः ।
क्षितजरा**मर कीर्ति**भर क्षमो, गलद**घे वर** मुक्तिरमाकरः ॥१॥

दिशतु मे**षरमां** वर **लापसी, खलहलां** स्फुर**द्राख**गिरौ पवे ! ।
गुणबदाम रिपुक्षयनिर्वृते, **रत बनालि अर**म्य**मुखाम्बुजम्** ॥२॥

जन **अखोड कपूर करम्बकं**, सुजल**दाडिम**नोहरनिस्वनम् ।
प्रणम **सेवक खांड** म **घी**तिदं, स्फुर**दहीं**शनुतं नत**खाजलम्** ॥३॥

फाग

जन**पस्तां**जिन **खारिक**भेदक सार,
कुहलापाक दमीदो सोपारी रस सार ॥१॥

सत् **सेवइआ मोतीआ कसमसिआ** सार,
दुष्टक**लाडूआ गलपापडी** जयजयकार ॥२॥

मांडीनत मंतारय वसुधा **मोतीचूर**,
महसूपकरणकारण **कयरी**पाक**खजूर** ॥३॥

माभण पुण्यव**सुं हालीनत** मंसुखसंग,
चार्वाचारोलीकर चारविजितमातंग ॥४॥

वरसोलां नतपदयुग पारगतं **नमजाक**,
जितशो**काकबली**श्वर सुकृत **सदाफल**लोक ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आंबा **नारायण** नतपदकज **सेलडिसार,**

वृष**बीजोरुं** **केलां** त्वामभिनौमि जितार ॥६॥

सालि **सुदालि**नतक्रम **मांडा** **वडि** जिनचंद्र,

जयसि **सुखीरवडां** जनकश्मलहर गततन्द्र ॥७॥

सुंदर**डोडी**लाधर **पापड** **पापडी** सार,

तूंरीआन्वित **कंकोडा** भततेस्तनुतार ॥८॥

गंतरे**फो** **फल**चिन्तन **डोडा** **पान** **लवंग,**

वरतर**जायफलो**न्नत**जाव** **त्रि**भुवनरंग ॥९॥

कलशः

इत्थं श्रीत्रिशलासुतः स्तुतिपथं दीपालिकावासरे
नीतः स्फारसुखासिकावलिकलैर्भोज्यैरशेषैः सुखम् ।
देयाद् वाचक**धर्मसागर**गुरोः पट्टाम्बरद्योतने
सूर्यश्रीगुरु**लब्धिसागर**शिशो**र्नेमे**र्मनोवाञ्छितम् ॥१०॥

॥ इति श्रीवीरजिनस्तोत्रं सुखासिकागर्भितं महोपाध्यायनेमिसागरगणिभिर्विरचितम् ॥

ठे. ६/चन्दन हाईवे,
डीसा (बनासकांठा)

❑

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org